हार की जीत

— सुदर्शन

लेखक—परिचय

श्री सुदर्शन जी का जन्म सन् 1855 में सियालकोट में हुआ। इनका मूल नाम बद्रीनाथ है। सुदर्शन ने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने प्रेमचन्द की भाँति ही सर्वप्रथम उर्दू में लिखा तत्पश्चात् उन्होंने हिन्दी में लिखा। सुदर्शन ने कहानियों के अतिरिक्त उपन्यास और नाटक भी लिखे।

इनकी कहानियाँ पुष्पलता, तीर्थयात्रा, सुदर्शन सुधा, सुप्रभात, परिवर्तन, पनघट, नगीना, चार कहानी आदि कहानी संग्रहों में संकलित है। प्रेमपुजारिन, देहाती, देवता और भाग्यवन्ती इनके उपन्यास हैं। अंजना, सिकन्दर और भाग्यचक्र इनके प्रसिद्ध नाटक हैं।

सुदर्शन ने सामाजिक जीवन के विविध पक्षों को अपनी कहानियों में उकेरा है। सामाजिक जीवन की विसंगतियों को चित्रित करते हुए सुदर्शन आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के हिमायती हैं। सुदर्शन की कहानियों में वर्णनात्मकता की प्रधानता होती है। वे परिस्थिति का अंकन करते हुए उस परिवेश के चक्रव्यूह में फँसे मानव की नियति और उसकी मनःस्थिति को अभिव्यक्त करते चलते हैं।

सुदर्शन सरल सहज शब्दावली और अपनी भावमयता में अनूठे हैं। सामाजिक जीवन के सरस एवं व्यावहारिक रूप का अभिव्यंजन इनकी कहानियों की विशेषता है।

पाठ—परिचय

हार की जीत कहानी संन्यासी की उदारता, प्रेम और मानवीयता के माध्यम से एक डाकू के हृदय परिवर्तन की मर्मस्पर्शी कहानी है। धोखे से डाकू खड्ग सिंह असहाय दुःखी अपाहिज बनकर बाबा भारती का प्राणों से प्रिय घोडा छीन लेता है लेकिन बाबा के ये शब्द ' इस घटना को किसी को मत बताना अन्यथा कोई भी गरीब अपाहिज पर विश्वास नहीं करेगा' पाषाण हृदयी डाकू के हृदय में संवेदना का निर्झर प्रवाहित कर देते हैं। डाकू खड्ग सिंह न केवल बाबा के घोड़े को लौटाता है बल्कि प्रायश्चित स्वरूप अपनी आँखों के गंगा जल से उस स्थान को पवित्र करता है जहाँ बाबा भारती के अश्रु बिन्दु गिरे थे। यह निजत्व की हानि को मनुष्यता की हानि पर समर्पित कर देने का भाव प्रदर्शित करने वाली आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी है।

**** ****

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनन्द आता है वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवत्—भजन से जो समय

बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बड़ा सुन्दर था, बड़ा बलवान था। इसके जोड़ का घोड़ा इलाके में न था। बाबा भारती उसे सुलतान कहकर पुकारते, अपने हाथ से खर–हरा करते, खुद दाना खिलाते, और देख–देखकर प्रसन्न होते थे। ऐसी लगन, ऐसे प्यार, ऐसे स्नेह से कोई सच्चा प्रेमी अपने प्यारे को भी न चाहता होगा। उन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था– रुपया, माल असबाब, जमीन, यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव के बाहर एक छोटे से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। परन्तु सुल्तान से बिछड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। मैं इनके बिना नहीं रह सकूँगा, उन्हें ऐसी भ्रांति–सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ऐसा चलता है जैसे मोर घन घटा को देखकर नाच रहा हो। गाँवों के लोग इस प्रेम को देखकर चकित थे, कभी–कभी कनखियों से इशारे भी करते थे, परन्तु बाबा भारती को इसकी परवाह न थी। जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड़गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते–होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा– खड़गसिंह! क्या हाल है?

खड़गसिंह ने सिर झुका कर उत्तर दिया– आपकी दया है।

''कहो, इधर कैसे आ गये ?

''सुलतान की चाह खींच लाई।''

''विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।''

''मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।''

''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।''

''कहते हैं, देखने में बड़ा सुन्दर है।''

''क्या कहना। जो उसे एक बार देख लेता है उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।''

''बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।''

बाबा और खड़गसिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया, घमंड से। खड़गसिंह ने घोड़ा देखा, आश्चर्य से। उसने सहस्त्रों घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था, सोचने लगा– भाग्य की बात है, ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था, इस साधु को ऐसी चीज से क्या लाभ! कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की–सी अधीरता से बोला– परन्तु बाबाजी! इसकी चाल न देखी तो क्या देखा?

बाबाजी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोल कर बाहर लाये, और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचककर सवार हो गये। घोड़ा वायु–वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर, उसकी गति देखकर, खड़गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाय, उस पर अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था, और आदमी थे! जाते–जाते उसने कहा–बाबाजी! मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

बाबा भारती डर गये। उन्हें रात को नींद न आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड़गसिंह का भय लगा रहता। परन्तु कई मास बीत गये, और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गये। और इस भय को स्वप्न के भय की नाँई मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता! कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी रंग को' और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आयी– ओ बाबा! इस कँगले की भी बात सुनते जाना।

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को थाम लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले–क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?

अपाहिज ने हाथ जोड़ कर कहा–बाबा! मैं दुखिया हूँ, मुझ पर दया करो। रामांवाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।

''वहाँ तुम्हारा कौन है?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे–धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका लगा, और लगाम हाथ से छूट गयी। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर बैठा घोड़े को दौड़ाये लिये जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गयी। यह अपाहिज खड़गसिंह डाकू था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे, और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्ला कर बोले–जरा ठहर जाओ।

खड़गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया, और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा–बाबाजी! यह घोड़ा अब न दूँगा।

''परन्तु एक बात सुनते जाओ।''

खड़गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है, और कहा– घोड़ा तुम्हारा हो चुका, मैं तुमसे वापस करने के लिए न कहूँगा, परन्तु खड़गसिंह केवल एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जायेगा।

''बाबाजी! आज्ञा दीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।''

''अब घोड़े का नाम न लो, मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।''

खड़गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि मुझे इस घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परन्तु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परन्तु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं, और पूछा–बाबाजी! इसमें आपको क्या डर है?

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया– लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।

और यह कहते–कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कभी कोई सम्बन्ध न था। बाबा भारती चले गये परन्तु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था– कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसे पवित्र भाव हैं! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था; इसे देखकर

उनका मुख फूल की नाँईं खिल जाता था; कहते थे, इसके बिना मैं रह न सकूँगा।

उसकी रखवाली में वह कई रात सोये नहीं। भजन–भक्ति न कर रखवाली करते रहे परन्तु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक न दीख पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। उन्होंने अपनी निज की हानि को मनुष्यत्व की हानि पर न्योछावर कर दिया, ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मन्दिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था; आकाश पर तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंकते थे। मन्दिर के अन्दर कोई शब्द सुनायी न देता था। खड़गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे–धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक किसी वियोगी की आँखों की तरह चौपट खुला था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परन्तु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। हानि ने उन्हें हानि की तरफ से बेपरवा कर दिया था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बन्द कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

अन्धकार में रात्रि ने तीसरा पहर समाप्त किया और चौथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार, जैसे कोई स्वप्न चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े। परन्तु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन–मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गये।

घोड़े ने स्वाभाविक मेधा से अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया।

बाबा भारती दौड़ते हुए अन्दर घुसे, और अपने घोड़े से गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, जैसे बिछड़ा हुआ पिता चिरकाल के पश्चात् पुत्र से मिल कर रोता है। बार–बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार–बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते और कहते थे– अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।

थोड़ी देर बाद जब वे अस्तबल से बाहर निकले तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे; वे आँसू उसी भूमि पर, ठीक उसी जगह, गिर रहे थे जहाँ बाहर निकलने के बाद खड़गसिंह खड़ा होकर रोया था।

दोनों के आँसुओं का उसी भूमि की मिट्टी पर परस्पर मिलाप हो गया।

शब्दार्थ–

खरहरा– घोड़े के बदन की गर्द साफ करने वाली लोहे की कंघी।
अस्तबल– घोड़ों को बाँधने का स्थान
बाहुबल– शारीरिक शक्ति
नाँई– समान
अपाहिज– अपंग
दिल टूटना– बहुत दुःखी

अभिलाषा– इच्छा
साँप लौटना– ईर्ष्या के वशीभूत होना
कीर्ति–यश
कंगले– दरिद्र
लगाम–डोरी
मेधा– बुद्धि।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. ''हार की जीत' कहानी किस प्रकार की है ?
   (क) आदर्शवादी (ख) प्रगतिवादी
   (ग) यथार्थवादी (घ) आदर्शोन्मुख यथार्थवादी ( )
2. 'इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' बाबा भारती के ऐसा कहने का कारण–
   (क) लोगों को अच्छा नहीं लगेगा
   (ख) लोग दुःखी हो जायेंगे।
   (ग) लोग भयभीत हो जायेंगे
   (घ) अपाहिज–गरीबों पर लोग विश्वास नहीं करेंगे। ( )
3. बाबा भारती के घोड़े का नाम था–
   (क) मुल्तान (ख) सुलतान
   (ग) धीरू (घ) वीरू ( )
4. 'बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।' ये शब्द थे–
   (क) ग्रामीण के (ख) बाबा भारती के
   (ग) राहगीर के (घ) खड़गसिंह के ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. खड़गसिंह ने स्वयं को किसका सौतेला भाई बताया ?
2. 'विचित्र जानवर है देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।' ये शब्द बाबा भारती ने किसके लिए कहे ?
3. डाकू खड़गसिंह ने किस विधि से बाबा भारती से घोड़ा प्राप्त किया ?
4. बाबा भारती को किस प्रकार की भ्रांति हो गयी थी ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. 'अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।' ये शब्द किसने, किससे तथा क्यों कहे ?
2. बाबा भारती घोड़े की किस प्रकार सेवा करते थे ?
3. घोडे सुलतान को देखकर बाबा भारती को कैसे आनंद की प्राप्ति होती थी ?
4. खड़गसिंह द्वारा छद्म तरीके से घोड़ा प्राप्त करने के तुरन्त बाद की बाबा भारती की दशा का वर्णन करो।

निबंधात्मक प्रश्न–

1. 'हार की जीत' कहानी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
2. खड़गसिंह तथा बाबा भारती का कुटिया में जो संवाद हुआ उसका वर्णन करो।
3. 'हार की जीत' कहानी का उद्देश्य सविस्तार लिखिए।
4. घोड़ा लौटाने के बाद अगर संयोगवश खड़गसिंह से बाबा मिल जाते तो दोनों में क्या वार्ता होती? कल्पना के आधार पर लिखिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न–

1. बाबाजी भी .... पास न रहने दूँगा।
2. सहसा उन्हें झटका .... जरा ठहर जाओ।
3. और यह कहते–कहते .... मनुष्य नहीं देवता है।

*****